उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स सतपाल चौहान

गढ़वाल-कुमाऊँ में स्वतन्त्रता-संग्राम के स्थानीय कारण

ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनाई गई राजनैतिक और आर्थिक साम्राज्यवादी नीति के पश्चात सभ्यता के संघात के फलस्वरूप नवजागरण के कारणों से भारतवर्ष में राष्ट्रीय भावनाओं का विकास हुआ। संपूर्ण देश को एकता के सूत्र में बांधने तथा ब्रिटिश सरकार का दृढ़तापूर्वक विरोध करने के लिए संगठन स्थापित किये गये। फलस्वरूप बीसवीं सदी के प्रारम्भ से ही भारतवर्ष में राष्ट्रीय आन्दोलनों का जन्म का विकास हुआ इन आन्दोलनों में कुमाऊँ-गढ़वाल का सक्रिय योगदान रहा। देश में व्याप्त स्वतन्त्रता-संग्राम के कारणों के अतिरिक्त कुमाऊँ-गढ़वाल में कुछ स्थानीय कारण विद्यमान थे, जिन्होंने यहां होने वाले राष्ट्रीय एवं जन-आन्दोलनों को शक्ति तथा गति प्रदान की। उन्हीं कारणों का उल्लेख प्रस्तुत करने का इस लेख का उद्देश्य है। समस्त कारणों को राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा अन्य कारण नामक पांच श्रेणियों में विभक्त किया गया है।

वर्ग (क)
राजनैतिक कारण

कुमाऊँ-गढ़वाल में बीसवीं शताब्दी के राष्ट्रीय एवं जन-आन्दोलनों के लिए निम्न राजनैतिक कारण उत्तरदायी माने गये —

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स सतपाल चौहान

कुमाऊँ में कांग्रेस की स्थापना (1912 ई०) – राहुल का

यह कथन कि 1912 से पूर्व कुमाऊँ का कांग्रेस से कोई सम्बन्ध नहीं था, तर्क संगत प्रतीत नहीं होता। यद्यपि कुमाऊँ में कांग्रेस की स्थापना 1912 में हुई। तथापि 1887 में ही कुछ स्थानीय व्यक्तियों ने कांग्रेस का सदस्य बनना प्रारम्भ कर दिया था, जिनमें 'ज्वाला दत्त जोशी' का नाम उल्लेखनीय है। सन् 1912 में कांग्रेस का अधिवेशन प्रयाग में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में कुमाऊँ के वाचस्पति पंत, ज्वाला दत्त जोशी, हरिराम पाण्डे, मुंशी सदानन्द सनवाल, शेख मानूल्ला, माधव गुरुरानी, बद्री दत्त जोशी आदि शांतिप्रिय राजनीतिज्ञों ने प्रतिभाग किया। तत्पश्चात् कुमाऊँ में प्रत्येक वर्ष एक सभा आयोजित कर कांग्रेस के सम्बन्ध में चर्चा की जाती थी। सन् ई० 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में कुमाऊँ कमिश्नरी के कई लोगों ने बड़े उत्साह के साथ प्रतिभाग किया।

होमरूल लीग की स्थापना - 1914

1914 में सम्पूर्ण देश में होमरूल आन्दोलन चला। मोहन जोशी, चिरंजीलाल, हेमचन्द्र, बद्री दत्त आदि नेताओं ने अल्मोड़ा में भी 'होमरूल लीग' की एक शाखा की स्थापना की इससे कुमाऊँ की राजनैतिक चेतना विकास हुआ। अल्मोड़ा में होमरूल लीग के नेताओं के प्रभाव के फलस्वरूप एक अपर्ल भारतीय भी उसमें सम्मिलित हो गयी थी।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411395739 8077038494 सतपाल चौहान

कुमाऊँ परिषद की स्थापना 1916-

1916 में नैनीताल में कुमाऊँ-परिषद की स्थापना की हुई। इस संस्था का उद्देश्य कुमाऊँ के तीनो जिलों (अल्मोड़ा, नैनीताल और ब्रिटिश गढ़वाल) मे राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा शिक्षा सम्बन्धी प्रश्नो (को) पर विचार-विमर्श करना था इस संस्था में तीनो जिलो के प्रत्येक विचारधारा के शिक्षित व प्रतिष्ठित व्यक्ति एंव नेतागण थे। प्रत्येक वर्ष कुमाऊँ-कमिश्नरी के महत्वपूर्ण स्थान पर इसका अधिवेशन सम्पन्न होता था। 1919 के पश्चात 'कुमाऊँ परिषद' का नेतृत्व गरम दलीय विचार धारा के लोगो के हाथ में आ गया था।

1926 में इसे कांग्रेस में सम्मिलित कर लिया गया प्रायः यह कहा जाता है कि 1926 से पूर्व 'कुमाऊँ परिषद' का इतिहास ही कुमाऊँ में हुए राष्ट्रीय आन्दोलनो का इतिहास है। कुमाऊँ परिषद की शाखाएं कुमाऊँ कमिश्नरी के स्थान-स्थान पर खोली गई कुमाऊँ-परिषद ने कुली उतार, कुली बेगार, कुली बर्दायश, जंगलात, नयाबाद, बन्दोबस्त आदि समस्याओ के विरुद्ध आवाज उठाई और आन्दोलन किया। इस संस्था ने जनमानस को उसके शोषण एंव समस्याओ से अवगत कराते हुए ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन के लिए प्रेरित किया।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

हैप्पी क्लब 1903 – संस्थापक - हरगोविन्द पंत

1903 में अल्मोड़ा में कुछ नवयुवकों ने मिलकर हैप्पी क्लब की स्थापना की (गुप्त संस्था) इसका मुख्य उद्देश्य कुमाऊँ के नवयुवकों में राजनैतिक चेतना का संचार करना था। 'हैप्पी क्लब' की सदस्य संख्या सीमित रखी गई और इसकी अधिकांश बैठकें शहर से बाहर एकांत स्थान पर होती थी।

* गढ़वाल का विभाजन 1815 *

1815 में ब्रिटिश सरकार ने उत्तराखण्ड को अधिकृत कर लेने के पश्चात् गढ़वाल को ब्रिटिश गढ़वाल और टिहरी गढ़वाल के नाम से दो भागों में विभक्त कर दिया। अंग्रेजों ने ब्रिटिश गढ़वाल को अपने अधीनस्थ रखा और टिहरी गढ़वाल को रियासत के रूप में सुदर्शन शाह को सौंप दिया। गढ़वाल के इस प्रकार के विभाजन से गढ़वाली जनता में भारी असन्तोष था और वे इसे माथे पर कलंक का टीका समझते थे। 1938 में श्रीनगर गढ़वाल के राजनैतिक सम्मेलन में टिहरी के युवा नेता श्रीदेव सुमन ने गढ़वाल के विभाजन पर तीव्र असन्तोष व्यक्त किया।

देश के महान् पुरुषो का कुमाऊँ-गढ़वाल मे आगमन :-
उन्नीसवी तथा बीसवी शताब्दी मे समय-समय पर देश के महान पुरुषो एंव नेताओ ने कुमाऊँ-गढ़वाल की यात्रा की. जिससे यहां चल रहे राष्ट्रीय आन्दोलनो को गतिशीलता प्रदान हुई ।

स्वामी विवेकानन्द द्वारा राष्ट्रीयता का जागरण
उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम शताब्दी मे स्वामी विवेकानन्द ने कुमाऊँ-गढ़वाल की यात्रा की। स्वामी जी ने तीन बार अल्मोड़ा की यात्रा की। अपनी दुसरी अल्मोड़ा यात्रा (1897) मे स्वामी जी ने अल्मोड़ा इण्टर कालेज मे व्याख्यान किया। राष्ट्रीय भावनाओं की प्रचुरता से युक्त उनके व्याख्यान पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया। स्वामी जी की कुमाऊँ-गढ़वाल यात्रा से यहां के जनसाधारण में राष्ट्रीय भावनाओं का विकास हुआ। महान स्वतन्त्रता-सेनानी कुर्मांचल केसरी बदरीदत्त पांडे और कुमाऊँ के राजनैतिक जनजागरण के पितामह - बद्रीलाल शाह उनसे काफी प्रभावित हुये। अल्मोड़ा स्वामी जी का प्रिय स्थल था। इसलिये विदेश यात्रा से लौटने के पश्चात उन्होने भारतवर्ष मे धर्म प्रचार हेतु दो केन्द्र स्थापित किये। उनमे एक कलकता के समीप 'बेलूर' और दूसरा अल्मोड़ा से कुछ मील दूर 'मायवती आश्रम' (चम्पावत) की स्थापना की इस आश्रम से 'प्रबुद्ध भारत' नामक पत्र प्रकाशित हुआ

उत्तराखण्ड राजभाषा नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

इसी प्रेस में कार्यरत महान स्वतन्त्रता सेनानी हर्षदेव औली ने अपना बौद्धिक विकास किया। इस प्रकार स्वामी जी ने कुमाऊँ-गढ़वाल जैसे पिछड़े क्षेत्रों की यात्रा की और वहां साप्ताहिक अखबार तथा छापेखाने की स्थापना की। फलतः वहां के सामाजिक एवं राजनैतिक जागरण में एक नई चेतना का संचार हुआ।

उत्तराखण्ड राजभाषा नोट्स 9411385738 8077938494 सतपाल चौहान

स्वामी सत्यदेव :-

स्वामी सत्यदेव पंजाब के निवासी थे 1913 में अमेरिका से लौटकर उन्होंने अल्मोड़ा में राष्ट्रीयता के उपदेश दिये स्वामी जी ने अल्मोड़ा में 'शुद्ध साहित्य समिति' की स्थापना की, जिसमें कुमाऊँ के तत्कालीन अनेक शिक्षित एवं महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने भाग लिया। स्वामी सत्यदेव अमेरिका से राष्ट्रीयता की नवीन भावना लेकर एक तुफान की भांति कुमाऊँ के राजनैतिक वातावरण पर आच्छादित हो गये। उनके भाषण गणतन्त्रवादी, ओजस्वी तथा उत्तेजक होते थे, जिससे युवकों के हृदय में नई आशा का संसार होता था।

बीसवीं शताब्दी की द्वितीय दशाब्दी के वर्षों में स्वामी सत्यदेव ने राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार किया उनके अल्मोड़ा आगमन से पूर्व वहां राष्ट्रीयता का - - - - ,

PTO

व्यापक प्रचार नही होता था। इन्द्र सिंह नगाल का यह कथन है कि असहयोग आन्दोलन के पश्चात स्वामी सत्यदेव ने राष्ट्रीय आन्दोलनो मे भाग नही लिया। वे प्राय: इससे दूर हट गये। किन्तु उनका यह कथन उपयुक्त प्रतीत नही होता क्योकि असहयोग आन्दोलन के पश्चात उन्होने धर्म और शिक्षा का प्रचार किया इससे स्पष्ट हो जाता है कि स्वामी सत्यदेव ने जन साधारण मे राष्ट्रीय भावनाओं को जागृत करने का मार्ग ही बदला था। स्वामी जी द्वारा हिन्दू धर्म प्रचार करने का तात्पर्य था हिन्दुओं को ईसाई बनने से बचाना, क्योकि विदेशियों द्वारा प्रचारित ईसाई धर्म उस काल मे विदेशी सभ्यता का ही प्रतीक था और जन साधारण मे शिक्षा के प्रचार के द्वारा उन्होने राष्ट्रीय भावनाओं के विकास मे सहायता दी।

लाला लाजपत राय :- 1912 मे गढ़वाल मे भीषण अकाल पड़ा। गढ़वाल की जनता को अकाल की भीषणता से बचाने के लिये लाला लाजपतराय काशीपुर आये और उन्होने गढ़वाल मे एक 'सस्ते गल्ले की दुकान' खुलवाई। राष्ट्रीय भावनाओं के महान उपासक लाला लाजपत राय के कुमाऊँ मे आगमन से जन साधारण उनके निकट सम्पर्क ~~मिला~~ मे आया

. . . . .

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उनके इस सेवा भाव तथा राष्ट्रीय भावनाओं से यहां की जनता का प्रभावित होना स्वाभाविक था। अकाल के समय सरकार द्वारा अन्न का सुप्रबन्ध न कर पाने से उसमें जनता की आस्था कम हो गई।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स सतपाल चौहान

महात्मा गांधी 1929 मे महात्मा गांधी स्वास्थ्य सुधार तथा खादी प्रचार के लिए कुमाऊँ की यात्रा पर आये। उन्होंने हल्द्वानी, ताकुला ( ) नैनीताल, भवाली, ताडीखेत, अल्मोड़ा, बागेश्वर और कौसानी की यात्राएं की प्रत्येक स्थान पर अपने व्याख्यानों में उन्होंने स्वदेशी, स्वावलंबन, आत्मशुद्धि एवं समाज में व्याप्त कुरीतियों के बारे में जनजागरण को अवगत कराया। कुमाऊँ की निर्धन जनता ने बड़े उत्साह के साथ गांधी जी को चन्दे की बड़ी-बड़ी थैलियां भेंट स्वरूप प्रदान की। कुमाऊँ का महिला समाज गांधी जी से ~~सर्वाधिक~~ सर्वाधिक प्रभावित था। महिलाओं ने अपने गहनो तक को गांधीजी को सहर्ष भेंट कर दिया। 1931 मे प्रान्त के लाटसाहब के पास किसानों की समस्याओं के समाधान हेतु गांधी जी पुनः नैनीताल आये। गांधी की इन इन यात्राओं के फलस्वरूप कुमाऊँ-गढ़वाल की जनता उनके सम्पर्क मे आयी और उनके सिद्धान्तो से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय आन्दोलन मे कूद पड़ी।

जवाहर लाल नेहरू :- महात्मा गांधी की कुमाऊँ यात्रा में जवाहर लाल नेहरू कई स्थानों में उनके साथ रहे। 1929 में भवाली में एक वृहद् जनसमूह को सम्बोधित करते हुए नेहरू जी ने जनता को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन करने के लिए तैयार रहने को कहा। 1936 में जवाहर लाल नेहरू दोगड्डा (ब्रिटिश गढ़वाल) पहुँचे। 1938 में नेहरू जी ने पुनः ब्रिटिश गढ़वाल की महत्वपूर्ण यात्रा की। इस यात्रा के समय उन्होंने श्रीनगर राजनैतिक सम्मेलन (मई 1938) में भाग लिया और एक प्रभाव शाली भाषण देकर जनता की मांगो का समर्थन किया।

उपरोक्त प्रमुख नेताओं के अतिरिक्त स्वामी दयानन्द सरस्वती, केशव चन्द्र सेन, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मोतीलाल नेहरू, डा० भगवान दास, श्रीमति एनीबेसेंट, महामना मदन मोहन मालवीय, पुरुषोत्तम दास, स्वामी रामतीर्थ आदि मनीषियों ने कुमाऊँ-गढ़वाल की यात्रा की। उनके यहां आने से जन साधारण उनके संपर्क में आया तथा उसमें राष्ट्रीय भावनाओं का विकास हुआ।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411388738 8077038494 सतपाल चौहान

क्रांतिकारियों का आगमन :- अनुश्रुति से विदित होता है कि प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस कुछ अवधि तक अल्मोड़ा मे रहे और रहोने वहा गुप्त क्रान्तिकारी संगठन स्थापित किये। 1930 में चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में रिवाल्वर का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए क्रान्तिकारियों का एक दल गढ़वाल आया नाना साहब के उत्तरकाशी निवास के सम्बंध मे प्रथम परिशिष्ट में उल्लेख किया जायेगा। क्रान्तिकारी भास्कर जोशी टिहरी नरेश भवानी शाह तथा प्रताप शाह के शासनकाल में गुप्त रूप में टिहरी में रहे थे। डा० डबराल का कथन है कि 1857 में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह में भाग लेने वाला एक सैनिक उत्तरकाशी में गंगा नदी के तट पर बनी गुफा में साधु के वेश में रहता था। और वह 1857 के विद्रोह से सम्बन्धित रोमांचकारी घटनाएँ सुनाया करता था।

इस प्रकार कुमाऊँ-गढ़वाल क्रान्तिकारियों का आगमन क्षेत्र भी रहा, जो यहां गुप्त रूप से क्रान्तिकारी संगठनों की स्थापना करने तथा ब्रिटिश सरकार के पंजे से बचने के लिए आये थे। यहां जो भी उनके सम्पर्क में आये वे उनकी देशभक्ति और क्रान्तिकारी भावनाओं से प्रभावित हुए थे।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल-बोहरा सर 7579431731

गढ़वाल - कुमाऊँ में योग्य नेताओं का आविर्भाव

बीसवी सदी के प्रारम्भिक चरणों में कुमाऊँ- गढ़वाल के राजनैतिक वातावरण में कुछ ऐसे नेताओं का अविर्भाव हुआ, जिन्होने देश स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। उन्होने अशिक्षित जनता में राष्ट्रीय भावनाओं का संचार कर उसे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आन्दोलन करने के लिए प्रेरित किया

अंग्रेजों की भेदभावपूर्ण नीति – भारतवासियों के साथ अंग्रेजो का व्यवहार अत्यधिक आपत्तिजनक था। अंग्रेज हिन्दुस्तानियों को गुलाम की दृष्टि से देखते थे। और उन पर अमानवीय अत्याचार करते थे। अंग्रेजो ने सेना मे भी भेदभाव की नीति अपनाई जब 'गढ़वाल राइफल्स' के सैनिको प्रथम विश्व युद्ध में मित्र राष्ट्रो की ओर से भाग लिया और फ्रांस गये, तो अंग्रेजो ने वहां भी उनके साथ भेदभाव की नीति को बरकरार रखा। इससे गढ़वाली सैनिको को हृदय मे अंग्रेजो के प्रति विद्वेष की भावना का जन्म लेना स्वाभाविक था। फ्रांस से गढ़वाली सैनिक जब स्वदेश लौट आये, तो....

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077038494
सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

अंग्रेजो द्वारा फ्रांस में उनके साथ अपनाई गई भेदभाव पूर्ण नीति के सम्बन्ध में उन्होंने अपने देशवासियों और दोलीय जनता को अवगत कराया। अंग्रेजो की भेदभाव नीति यहां तक बढ़ गई थी कि नैनीताल के मालरोड पर भारतीयो को चलने का अधिकार नही था यदि कभी कोई भारतवासी अज्ञानवस स्वाभिमान के साथ माल रोड पर चलता था तो उसे अपमानित कर नीचे की सड़क (जिसमे घोड़े-गधे वर्तमान मे चलते हैं) डकेल दिया जाता था।

सरकारी तथा रियासती कर्मचारियो का आतंक

कुमाऊँ- गढ़वाल की अधिकांश जनता अशिक्षित और भोलीभाली थी। इसलिए सरकारी तथा रियासती कर्मचारियों ने अपने अत्याचारों से उन्हे आतंकित कर रखा था। गांव के पटवारी पधान, पेशकार, पतरोल (फॉरेस्ट गार्ड) आदि कर्मचारी जन साधारण को काफी परेशान करते थे। पटवारी स्वयं को पट्टी का नायब ही समझते थे और मुफ्त मे खाद्य एवं अन्य सामग्री जनता से लिया करते थे। टिहरी राज्य के कर्मचारी निजी स्वार्थो की पूर्ति हेतु जनता का शोषण करते थे। . . . . . .

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

कर्मचारियों द्वारा मांगी गई वस्तु देने से इंकार करने पर जनता को कठोर यातनाएं दी जाती थी। टिहरी राज्य की जनता राजा की अपेक्षा उसके कर्मचारियों से अधिक परेशानी थी। इसीलिए जनता समय-समय पर उनके विरुद्ध रोष प्रकट किया। टिहरी राज्य मे पुलिस की व्यवस्था भी दोषयुक्त थी। पुलिस जनसाधारण के ~~कल्या~~ कल्याण के बारे मे न सोचकर उनके प्रति अत्याचार करने में ही अपना गौरव समझती थी। इस प्रकार के भ्रष्ट और अत्याचारी कर्मचारियों के विरुद्ध जनसाधारण में असंतोष व्याप्त था। राज्य की ओर से उन पर कोई विशेष नियंत्रण नही था।

लाइसेंस नीति –

गदर के पश्चात जब ब्रिटिश सरकार ने कुमाऊँ कमिश्नरी की जनता से हथियार छीनने का आदेश जारी किया, तो रामजे ने सरकार की इस नीति का घोर विरोध किया। रामजे के विरोध के सम्मुख सरकार को झुकना पड़ा। किन्तु 1888–89 मे सरकार ने पुन: एक आदेश जारी कर कुमाऊँ कमिश्नरी के लोगो से अपने हथियार अदालत मे जमा करने और उन पर लाइसेंस लेने को कहा। कुछ लोगो ने अपने हथियार अदालत मे जमा कर लाइसेंस ले लिया,

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल - चौहान सर 7579431731

परन्तु अधिकांश लोगो ने अपने हथियार घरो मे ही तोड़ डाले क्योकि वे इतने निर्धन थे कि प्रतिवर्ष लाइसेंस शुल्क नही दे सकते थे। वनो के समीप रहने वाली जनता हथियारो के अभाव मे दुखी हो गई। वह जंगली जानवरो से स्वंय और अपनी खेती की असुरक्षा अनुभव करने लगी।

सरकार द्वारा कुमाऊँ कमिश्नरी में लाइसेंस नीति को अपनाया जाना एक अनुचित कदम था। उस काल मे यहां का जनमानस इतना निर्धन था कि उसके लिए यह संभव नही था कि जो जनमानस के कष्ट के विरुद्ध - सरकार की नीति का विरोध करने का साहस कर सकता हो। जनमानस को ब्रिटिश सरकार द्वारा उसकी सुविधाओं की उपेक्षा कर राजकीय कोष भरने की नीति अच्छी नही लगी और धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार मे उसका विश्वास उठने लगा।

देहरादून में टिहरी राज्य प्रजामण्डल की स्थापना - 1939

23 जनवरी 1939 को देहरादून मे 'टिहरी राज्य प्रजामण्डल' की स्थापना हुई और 29 अप्रैल, 1929 को उसके चुनाव (प्राथमिक) सम्पन्न हुए। ....

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

तत्पश्चात दिल्ली, लाहौर, मसूरी आदि नगरो मे आजीविक हेतु टिहरी निवासियों ने उन नगरो मे भी प्रजामण्डल की शाखाएं स्थापित कर दीं। इसी समय टिहरी राज्य की प्रतिनिधि सभा ने 'रजिस्ट्रेशन ऑफ ऐशोसिएशन' नामक एक विधेयक पारित किया, जिसका उद्देश्य राज्य के अन्तर्गत प्रजामण्डल आदि की गतिविधियों पर नियंत्रण रखना था। प्रजामण्डल ने टिहरी राज्य मे पंजीकरण हेतु अपना आवेदन पत्र प्रस्तुत किया, किन्तु सफलता नही मिल पायी। टिहरी राज्य प्रजामण्डल की मुख्य मांगे 'पौन-दोटी' कर तथा बरा-बेगार जैसी अपमानजनक कुप्रथाओं को समाप्त करना और राज्य मे उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था कहा जाता है कि प्रजामण्डल टिहरी रियासत के अत्याचारों से पीड़ित जनता के लिए आशा की किरण थी 'प्रजा[redacted] की आशा की किरण'

प्रजामण्डल को मान्यता देना तो दूर रहा, इसके विपरीत राज्य की ओर से उसकी गतिविधियों पर नियंत्रण रखने का प्रस्ताव पारित कर राज्य ने जन साधारण के असंतोष मे वृद्धि कर दी.

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल - चौहान सर 7579431731

कुमाऊँ कमिश्नरी को गैर आइनी घोषित करना

ब्रिटिश काल में भारत प्रेसीडेंसियों और प्रान्तो में विभक्त था। प्रत्येक प्रेसीडेंसी जिन कानूनो द्वारा प्रशासित होती थी उन्हे रेगुलेशन (नियम) कहते थे। प्रत्येक विजित प्रदेश जिस प्रेसीडेंसी में सम्मिलित किया जाता था उसमे उसी प्रेसीडेंसी मे लागू होने वाले रेगुलेशंस ही लागू होती थी। ये प्रदेश रेगुलेटेड क्षेत्र अथवा रेगुलेटेड प्रान्त कहलाते थे। साथ ही कुछ नवीन विजित प्रदेश ऐसे भी थे (जैसे कुमाऊँ और अवध), जिनमे रेगुलेटेड क्षेत्र मे संचालित कानूनो को लागू करना उचित नही समझा गया था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877038494 सतपाल चौहान

उन्हे कुछ 'गैर आइनी' प्रदेश कहा जाता था। 'गैर आइनी' प्रदेशो मे कमिश्नर गवर्नर जनरल के प्रतिनिधि (Agent) के रूप मे शासन करता था। उसे दीवानी मामलों मे उच्च न्यायालय तक के अधिकार और फौजदारी मामलो मे सेशन जज के अधिकार प्राप्त थे। कुमाऊँ कमिश्नरी को भी गैर आइनी घोषित किया गया था। यहां कमिश्नर अपने मनमाने लागू करते थे। जिससे जनता मे भारी क्षोभ व्याप्त था .....

PTO.

धीरे- धीरे इस जनअसंतोष ने आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। जब आन्दोलन बढ़ता गया तो 1925 में सरकार ने कुमाऊँ- कमिश्नरी को 'गैर आइनी' क्षेत्रों की श्रेणी से हटाकर प्रांत के अन्य जिलों की भांति स्थिति प्रदान कर दी।

ब्रिटिश सरकार और टिहरी रियासत की जन - विरोधी नीति :-

कुमाऊ कमिश्नरी मे हुए राष्ट्रीय एंव जन आन्दोलन प्रारम्भ मे शांतिपूर्ण रहे तथापि सरकार ने झूठे दोष आरोपित कर जन नेताओं को गिरफ्तार कर जैलों मे बन्द कर दिया गया अंग्रेज अपने स्वार्थो हेतु टिहरी रियासत मे अनावश्यक हस्तक्षेप करते है। अंग्रेजो द्वारा टिहरी मे जनता का उत्पीड़न किये जाने पर भी राजा नरेन्द्र शाह उनसे कुछ नही कहते थे। नरेन्द्र शाह के शासन काल मे अंग्रेज शिकारी विलसन और उसके पुत्रो ने वहां की जनता पर अनेक अत्याचार किये। किन्तु राजा ने दोषी होने पर भी विलसन को निर्दोष सिद्ध करने की चेष्टा की और उससे कुछ भी नही कहा

1930 मे संयुक्त प्रान्त के गवर्नर 'सरमालक हैली' अस्पताल की नींव डालने नरेन्द्र नगर आये . . . . .

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8897038494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077938494 सतपाल चौहान

टिहरी राज्य की ओर से स्वातंत्र जनता को गवर्नर साहब के स्वागत के लिए बुलाया गया। गवर्नर साहब के मनोविनोद के लिए माघ की ठण्ड में नग्न मुद्रा में जनता को नृत्य करते हुए तालाब में कूद जाने का आदेश दिया गया।

जनता ने रियासती कर्मचारियों के भय से इस आदेश को माना तो अवश्य, किन्तु उसके हृदय में राजा के विरुद्ध विद्रोह की भावना घर कर गई। जनता ने सोचा कि जिस राजा की रियासत को उन्होंने खून-पसीने से सींचा है वह उनकी पशुओं के बराबर भी इज्जत नहीं करता

टिहरी राज्य के कारागारों की स्थिति भी नारकीय थी। राजबंदियों को इन जेलों में बंद कर कठोर यातनाएं दी जाती थी। अतः उनके सम्मुख दो ही मार्ग थे – या तो कठोर शर्तों पर रिहा होना या फिर जेल में घुट-घुट कर मर जाना

जवाहर लाल नेहरू ने भी टिहरी के जेलों की नारकीय स्थिति की भर्त्सना की है। टिहरी की जेलों में राजनैतिक बंदियों को कठोर यातनाएं दिये जाने के विरुद्ध जनमानस में तीव्र आक्रोश व्याप्त था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

पेशावर सैनिक विद्रोह का प्रभाव 23 अप्रैल 1930 में गढ़वाली सैनिको ने चन्द्र सिंह गढ़वाली के नेतृत्व में पेशावर मे पठानो के ऊपर गोली चलाने के ब्रिटिश सरकार के आदेश का खुला उल्लंघन किया यह घटना भारतीय इतिहास मे 'पेशावर सैन्य विद्रोह' के नाम से विख्यात है। पेशावर सैन्य विद्रोह ने सारे देश को प्रभावित किया और सम्पूर्ण देश मे 'गढ़वाल दिवस' मनाया गया। पेशावर सैन्य विद्रोह ने ब्रिटिश गढ़वाल को विशेष रूप से प्रभावित किया 1930 के बाद सम्पन्न होने वाले समस्त राजनैतिक अधिवेशनो मे चन्द्र सिंह को मुक्त करने की मांग, पेशावर के विद्रोही सैनिको को आर्थिक सहायता प्रदान करने तथा सरकार द्वारा उन्हे राजनैतिक कैदी माने जाने के प्रस्ताव पास होते थे।

प्राकृतिक सुरक्षा- कुमाऊँ गढ़वाल मे प्राकृतिक सुरक्षाएं उपलब्ध होने के कारण भी यहां चल रहे राष्ट्रीय एंव जन-आन्दोलनों को निरन्तर गतिशीलता प्रदान हुई सरकार स्वतन्त्रता-संग्राम के सैनानियों को गिरफ्तार करने मे असमर्थ रहती थी, क्योंकि प्राकृतिक सुरक्षाओं का लाभ उठाकर वे भूमिगत हो जाते थे। सरकार की पकड़ मे न आ पाने के कारण वे निरंतर राष्ट्रीय एंव जन आन्दोलनों का नेतृत्व करते रहते थे।

गढ़वाल-कुमाऊँ में स्वतन्त्रता संग्राम के स्थानीय कारण — भाग-2

वर्ग-'ख'

⊛ सांस्कृतिक कारण -

किसी भी देश में जन-जागृति उत्पन्न करने का प्रमुख (कारण) श्रेय वहां की साहित्यिक संस्थाओं तथा समाचार पत्रों को दिया जाता है। स्वतन्त्रता-संग्राम की अवधि में गढ़वाल-कुमाऊँ में सामाजिक और राजनैतिक चेतना का प्रसार करने का पूरा श्रेय वहां की साहित्यिक संस्थाओं एवं समाचार पत्रों को है। जिनका क्रमचार निम्न है.

⇒ डिबेटिंग क्लब, सत्-सभा और संस्कृत विद्यालय की स्थापना (1870) —

1870 ई० में बुद्धिवल्लभ पंत के सतत प्रयत्नों से अल्मोड़ा में 'डिबेटिंग क्लब' की स्थापना हुई। इसी समय अल्मोड़ा में 'सत सभा' और 'संस्कृत पाठशाला' भी खोली गई। इन सभी संस्थाओं का उद्देश्य सामाजिक एवं नैतिक उन्नति के साथ-साथ सरकार से प्रजा के दुःखों को दूर करने के लिए निवेदन करना था . . . .

इण्डियन बोयज हिल स्कूल - 1912 -

यह स्कूल 1912 मे थियोसोफिस्ट नेता 'जी० एस० औरंडले' और उनके स्थानीय सहयोगियों की प्रेरणा से अल्मोड़ा में खोला गया। यह संस्था स्थानीय जनता द्वारा दिये गये चंदे से चलती थी और इसका मुख्य उद्देश्य सनातन धर्म एवं राष्ट्रीय भावनाओं का प्रचार करना था

शुद्ध साहित्य समिति 1913 - 1913 में 'स्वामी सत्यदेव' ने अल्मोड़ा

में शुद्ध साहित्य-समिति की स्थापना की। इस समिति में तत्कालीन कुमाऊँ के भद्र पुरुषो ने सक्रिय भाग लिया शुद्ध साहित्य समिति की प्रमुख विशेषता यह थी कि उसमें साहित्यिक पुस्तको के अतिरिक्त राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण पुस्तके, जिन्हे रखना और पढ़ना अवैधानिक था, ढूँढ़-ढूँढ़ कर रखी गई थी। इस समिति मे 1857 के विद्रोह में भाग लेने वाले वीर मंगल पाण्डे, तात्या टोपे आदि के क्रिया-कलापो एवं अंग्रेजो के अत्याचारो से वर्णित पुस्तके भी उपलब्ध थी। इस समिति के अधिवेशन समय-समयपर होते रहते थे।.....

PTO

इस प्रकार 'शुद्ध-साहित्य-समिति' के माध्यम से कुमाऊँ में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार हुआ है सन 1857 में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह में भाग लेने वाले नेताओं के इतिहास तथा उनकी राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण साहित्य को पढ़ने से जनसाधारण पर राष्ट्रीय भावनाओं का प्रभाव पड़ा। बीसवीं शताब्दी में कुमाऊँ कमिश्नरी में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध होने वाले आन्दोलनों के लिए यह भी एक अनुकूल काल था। सन 1913 से 1926 तक निरन्तर साहित्यिक सेवा के माध्यम से राष्ट्रीयता का प्रचार कर योग्य संचालक के अभाव में यह समिति समाप्त हो गयी।

* **समर-स्कूल अल्मोड़ा** :- स्वामी सत्यदेव ने अल्मोड़ा के नारायण तिवारी देवालय में स्थित अपनी कुटी में 'समर स्कूल' नामक संस्था की स्थापना की इस (~~प्रकार~~) स्कूल में देश प्रेमी लोग नियमित रूप से एकत्रित होकर देश में व्याप्त समस्याओं पर विचार-विमर्श करते थे और उसके समाधान के लिए उपाय ढूँढ निकालते थे

* **प्रेम सभा** :- 1914-1914 में गोविन्द बल्लभ पंत के प्रयत्नों से साहित्यिक प्रचार तथा समाज सुधार के उद्देश्य से काशीपुर में प्रेम सभा की स्थापना हुई यह सभा (काशी नागरी प्रचारणी) सभा की शाखा के रूप में स्थापित हुई प्रेम सभा के स्वंय सेवकों ने काशीपुर तथा पर्वतीय क्षेत्र में समाज सेवा के कार्यों में सक्रिय भाग लिया। समय-समय पर इस सभा के अधिवेशन होते रहते थे।

प्रेम विद्यालय ताडीखेत (1921) —

1921 में देश भक्त भागीरथ पांडे और हर गोविन्द पंत के प्रयत्नो से ताडीखेत (अल्मोड़ा) में प्रेम विद्यालय की स्थापना हुई। इस संस्था ने पर्वतीय प्रदेश में रचनात्मक कार्य किए और राष्ट्रीय आन्दोलनों को संगठित रूप से संचालित करने के लिए योग्य कार्यकर्ताओं को जन्म दिया। इस प्रकार प्रेम विद्यालय एक विशुद्ध राष्ट्रीय संस्था थी, जहां स्वतन्त्रता सेनानी राष्ट्रीय भावनाओं की शिक्षा ग्रहण करते थे।

देव प्रयाग पुस्तकालय — कृष्ण पुस्तकालय देव प्रयाग' स्थानीय

जनता में साहित्यिक जागृति एवं चेतना का संचार कर रहा था अत: टिहरी राज्य की सरकार ने इस पुस्तकालय पर अपंजीकृत होने का दोष आरोपित कर उसे गैर कानूनी घोषित कर दिया और उसके मंत्री रामदयाल एवं प्रमुख कार्यकर्ता विद्याधर डंगवाल को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया

देवप्रयाग के आस-पास के सभी साहित्यिक प्रेमियों को उनके ज्ञान के केन्द्र को बलात् बंद करने की रियासती नीति अरुचिकर लगी। फलत: उनके हृदय में टिहरी राज्य के प्रति घृणा की भावना उत्पन्न हो गयी।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411305738 8077336494 सतपाल चौहान

टिहरी में बाल-सभा की स्थापना 1935 –

1935 में सत्यप्रसाद रतूड़ी ने सकलाना पट्टी के उनियाल ग्राम में बाल-सभा की स्थापना की इस संस्था का मुख्य उद्देश्य स्कूल के विद्यार्थियों में सामाजिक सेवा का भाव उत्पन्न करना था। धीरे-धीरे इसका प्रभाव बढ़ता गया यद्यपि प्रारम्भ में 'बाल सभा' का उद्देश्य सामाजिक सेवा था, यद्यपि बाद में देश प्रेमी अध्यापक सत्यप्रसाद रतूड़ी इसके माध्यम से छात्रों में राष्ट्रीय भावना उत्पन्न करने लगे थे। अतः टिहरी राज्य सरकार ने 'बाल-सभा' पर रोक लगाने की कोशिश की और इसके कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया।

अन्य संस्थाएं :

बाल सभा के अतिरिक्त टिहरी में 'सरस्वती विद्यालय' 'हिमालय विद्यापीठ' आदि संस्थाएं खुली, जिनका प्रमुख उद्देश्य नवयुवकों में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार करना था। इसी प्रकार कुमाऊँ में भी 'गणानंदा प्रजामंडल' 'सेवाश्रम बागेश्वर' 'गांधी आश्रम चनौदा', स्वराज्य मन्दिर बागेश्वर, उद्योग मन्दिर देघाट, 'रामकृष्ण आश्रम अल्मोड़ा', राम सिंह धौनी आश्रम जैंती, जौहर सेवा संघ भुंशियारी, दसा सेवा संघ धारचूला, नामक संस्थाओं की स्थापना हुई इन सभी संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य रचनात्मक कार्यों एवं राष्ट्रीय भावनाओं का प्रसार करना था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8877026494 सतपाल चौहान

(26)

साहित्यकार -

साहित्य समाज का दर्पण होता है। उन्नीसवी तथा बीसवीं शताब्दी में कुमाऊँ-गढ़वाल में अनेक साहित्यकारो का अभिर्भाव हुआ। इस अवधि के कुमाऊँ - गढ़वाल के कवियों के काव्य में राष्ट्रीय भावना, विदेशी वस्तो का बहिष्कार, स्वदेशी प्रचार, सामाजिक बुराईयों पर तीव्र प्रहार और ब्रिटिश शासन के दोषो पर प्रकाश स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। इन कवियो में लोककवि गुमानी, मौलाराम, गौर्दा का नाम उल्लेखनीय है।

लेखको में डा० हेमचन्द्र जोशी, बद्री लाल शाह, आदि प्रमुख है। इन दोनो लेखको ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय आन्दोलन को गतिशीलता प्रदान की। राष्ट्रीय कार्यो में व्यस्त देश के महान नेताओ से सम्बन्धित गीत भी कुमाऊ-गढ़वाल के लोक साहित्य में दिखाई देते हैं

* समाचार पत्र *

समाचार पत्रो के माध्यम से जनसाधारण जागृति उत्पन्न होती है। इसीलिए उनके महत्व को संसार के महान पुरूषों ने भी स्वीकार किया है। ब्रिटिश काल में प्रमुखत: निम्न लिखित समाचार पत्र कुमाऊँ-गढ़वाल में सामाजिक तथा राजनैतिक जागृति उत्पन्न कर रहे थे —

P.T.O

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7574431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077038494 सतपाल चौहान

अल्मोड़ा अखबार 1871

1870 में अल्मोड़ा में डिबेटिंग क्लब की स्थापना के पश्चात संयुक्त प्रान्त के लाट साहब सर विलियम म्योर 'अल्मोड़ा आये। अल्मोड़ा के कुछ भद्र पुरुषों ने लाट साहब से भेंट कर उन्हे डिबेटिंग क्लब के उद्देश्यों से अवगत कराया। क्लब के उद्देश्यों से प्रसन्न होकर लाटसाहब ने उन्हें क्लब के कार्यो के विवरण को प्रकाशित करवाने के लिए एक प्रेस खोलने का सुझाव दिया।

अतः 1871 में डिबेटिंग क्लब प्रेस से 'अल्मोड़ा अखबार' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया डा० पालीवाल तथा डा० त्रिलोचन पाण्डे का यह कथन कि 'अल्मोड़ा अखबार' का प्रकाशन 1913 से प्रारम्भ हुआ था, सर्वथा असंगत है।

सरकारी रजिस्टर में अल्मोड़ा अखबार की संख्या दस अंकित है। और संयुक्त प्रान्त का प्रथम दैनिक माना जाता है। 1913 से पूर्व अल्मोड़ा अखबार राजनीति से सम्बन्ध न रखकर केवल समाज से सम्बन्धित स्थानीय समाचार प्रकाशित करता था। 1913 में मुंशी सदानन्द सनवाल के स्थान पर बद्रीदत्त पाण्डे 'अल्मोड़ा अखबार' के सम्पादक नियुक्त हुए. उन्होंने इस पत्र को नवीन स्वरूप प्रदान किया. . . . . .

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

..... बद्रीदत्त पाण्डे के संपादकत्व में अल्मोड़ा अखबार के माध्यम से राष्ट्रीय भावनाओं से ओत प्रोत एवं ब्रिटिश शासन के फलस्वरूप समाज में व्याप्त कठिनाइयों पर अत्यन्त मार्मिक लेख प्रकाशित होने लगे फलतः अल्मोड़ा अखबार की ग्राहकसंख्या तीन गुना बढ़ गई। यह समाचार पत्र ब्रिटिश सरकार के बड़े अधिकारियों के काले-कारनामों की आलोचना करने में भी नहीं चूकता था।

अतः अल्मोड़ा अखबार अंग्रेज अधिकारियों के दिल में खटकने लगा जिसके परिणामस्वरूप 1918 में इस पत्र से एक हजार रुपये की जमानत मांगी गई और न देने पर इसके प्रकाशन पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

शक्ति साप्ताहिक - 1918

1918 में सरकार के हस्तक्षेप के कारण अल्मोड़ा अखबार का प्रकाशन बन्द हो जाने पर दीपावली के शुभ अवसर पर बद्रीदत्त पाण्डे के संपादकत्व में शक्ति साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। वे 1918 से 1926 तक इसके संपादक रहे 'शक्ति' पत्र के माध्यम से राष्ट्रीयता का प्रचार तथा अंग्रेजों एवं राजभक्तों के जन विरोधी कार्यों पर तीव्र कटाक्ष किये। एक विशुद्ध राष्ट्रीय समाचार पत्र होने के कारण सरकार द्वारा कई बार इससे जमानत मांगी गई। सरकारी अध्यादेश के कारण 1942 से 1946 तक 'शक्ति' का प्रकाशन बन्द रहा।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

1946 में गोविन्द वल्लभ पन्त के प्रयत्नों के फलस्वरूप पुन: इसका प्रकाशन हुआ। बद्रीदत्त पाण्डे के अतिरिक्त राम सिंह धौनी और विक्टर मोहन जोशी जैसे महान देश भक्त भी कुछ अवधि तक शक्ति के संपादक रहे।

स्वाधीन प्रजा – 1930

जनवरी 1930 को प्रजातंत्र की कल्पना के प्रचारार्थ विक्टर मोहन जोशी ने 'स्वाधीन प्रजा' नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया इस समाचार पत्र हेतु जवाहर लाल नेहरू ने भी अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। 'स्वाधीन प्रजा' के माध्यम से मोहन जोशी ने जनसाधारण में राष्ट्रीय भावनाओं का व्यापक प्रचार किया जोशी जी के लेख इतने मार्मिक तथा उत्तेजक होते थे कि साधारण मनुष्य के हृदय में भी चेतना का संचार कर देते थे। उन्होंने 'पिण्डारी ग्लेशियर की सैर' और 'परतंत्र हिमालय सरकार' नामक शीर्षकों के माध्यम से सरकार की दमन नीति पर कुठाराघात किया फलत: सरकार ने इस पत्र से छ: हजार रुपये की जमानत मांगी। जमानत देना स्वाभिमानी जोशी जी के सिद्धान्तों के विरुद्ध था। अत: उन्नीसवां अंक अर्द्ध प्रकाशित कर प्रेस ताला डालदिया गया। तत्पश्चात कृष्णानन्द जोशी ने स्वाधीन प्रजा का प्रकाशन जारी रखा।

गढ़वाली पत्र 1905

गढ़वाल भूनिगत की ओर से 1905 में देहरादून से 'गढ़वाली' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ प्रारम्भ में यह पत्र पाक्षिक था। किन्तु 1913 में ब्रिटिश गढ़वाल से प्रकाशित होने वाले कुछ छोटे-छोटे समाचार पत्रों को 'गढ़वाली' पत्र में सम्मिलित कर साप्ताहिक बना दिया गया प्रारम्भ में गिरिजा दत्त नैथानी, तारादत्त गैरोला, और तत्पश्चात विश्वम्भर दत्त चन्दोला इसके संपादक रहे। शनैः शनैः गढ़वाली एक उच्चकोटि का साप्ताहिक समाचार पत्र बना। इसके माध्यम से दोनों गढ़वालों (ब्रिटिश गढ़वाल और टिहरी गढ़वाल) में सामाजिक तथा राजनैतिक चेतना का प्रादुर्भाव हुआ।

कर्मभूमि साप्ताहिक 1939

लैंसडौन से 'कर्मभूमि' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ कर्मभूमि के माध्यम से टिहरी में रियासत के विरुद्ध जन आन्दोलन को व्यापक बनाया गया टिहरी-जन आन्दोलन के युवा नेता श्रीदेव सुमन को कर्मभूमि के संपादक मण्डल में स्थान दिया गया। जिन्होंने कर्मभूमि साप्ताहिक पत्र के माध्यम से टिहरी रियासत के जनसाधारण

PTO

की समस्याओं पर विचारपूर्ण तथा गम्भीरतापूर्ण लेख लिखे कहा जाता है कि 'कर्मभूमि' ने ब्रिटिश गढ़वाल के राष्ट्रीय तथा टिहरी राज्य के जनआन्दोलनों की कड़ियों को जोड़ने और गतिशील बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

इन प्रमुख समाचार पत्रों के अतिरिक्त कुमाऊँ - गढ़वाल से 'जागृत जनता' 'विशाल कृति', 'पुरुषार्थ' आदि छोटे-छोटे समाचार पत्रों का प्रकाशन होता था। इन सभी समाचार पत्रों का उद्देश्य कुमाऊँ - गढ़वाल में सामाजिक और राजनैतिक जागृति उत्पन्न करना था।

इस प्रकार कुमाऊँ - गढ़वाल में सम्पन्न हुए राष्ट्रीय एवं जन आन्दोलनों में स्थानीय समाचार पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अल्मोड़ा अखबार, शक्ति साप्ताहिक, स्वाधीन प्रजा और 'कर्मभूमि' में प्रकाशित ब्रिटिशकालीन लेखों से इस तथ्य का आभास होता है कि इन समाचार पत्रों पर उस काल में किसी प्रकार का प्रतिबन्ध (सेंसरशिप) नहीं था। यद्यपि उस काल में सरकार द्वारा कुछ समाचार पत्रों से जमानतें अवश्य मांगी गई तथापि जमानतें तब ही मांगी गई थी जबकि इन समाचार पत्रों ने स्थिति का वास्तविकता से कहीं अधिक वर्णन करना प्रारम्भ कर दिया था।

इन समाचार पत्रो मे देश मे घटित होने वाली प्रत्येक राजनैतिक घटना का उत्तेजनात्मक वर्णन तथा अंग्रेजो के अत्याचारो को बढ़ा चढ़ा कर प्रकाशित किया गया है। इसी प्रकार इन पत्रो में अनेक विद्रोहात्मक लेख दृष्टिगोचर होते हैं ऐसी स्थिति में भी इन पत्रो का प्रकाशन जारी रहना इस बात का परिचायक है कि समाचार पत्रों के प्रति ब्रिटिश सरकार ने उदार एवं स्वतन्त्र नीति अपनाई थी।

सेंसर शिप समाचार पत्रो के लिए वास्तविक रूप से धला घोंटू कानून है। इससे जन साधारण को समाज तथा देश मे घटित घटनाओ का ज्ञान नही हो पाता है। साथ ही राजनैतिक मे तानाशाही की प्रवृति का विकास होता है।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर
7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल-चौहान सर 7579431731

वर्ग (ग)

सामाजिक कारण

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411365738 8077036494 सतपाल चौहान

सामाजिक जागृति – बीसवी शताब्दी से पूर्व कुमाऊं कमिश्नरी की जनता अपनी अशिक्षा, नैतिकता की कमी और सैकड़ो वर्ष सामंतवादी शासन के अधीन रहने के कारण राजनीति में भाग लेने से घबराती थी। कुमाऊं-गढ़वाल के समाज में जागृति पैदा होने का एक प्रमुख कारण यह भी था कि यहां के लोग बहुत बड़ी संख्या में जीविकोपार्जन के लिए मैदानी क्षेत्रो के बड़े-बड़े नगरो को चले गये थे। बीसवी शताब्दी में देश के प्रत्येक बड़े नगर का राजनैतिक वातावरण उत्तेजनापूर्ण था। फलस्वरूप यहां के समाज में भी जागृति फैलने लगी।

कुली उतार, कुली बेगार, कुली बर्दायश, बरा-बेगार, छोटी बर्दायश, प्रभुसेवा नामक कुप्रथाओं से भी कुमाऊं-गढ़वाल के समाज में काफी क्षोभ व्याप्त था। इन सबका उल्लेख आर्थिक कारणों में विस्तारपूर्वक किया जायेगा।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411365738 8077036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल-चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहानसर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

ईसाई धर्म प्रचार -

भारत वर्ष मे अंग्रेजो का उद्देश्य अपने साम्राज्य का विस्तार करने के साथ - साथ ईसाई धर्म का प्रचार करना भी था। कुमाऊं कमिश्नरी में वहां के लोकप्रिय कमिश्नर रामजे ने (1856-84) इस नीति को विशेष प्रोत्साहन दिया फलत: यहां ईसाई धर्म के प्रचारक सक्रिय हो गये और कई निर्धन परिवार प्रलोभन के आधार पर धर्म परिवर्तन कर ईसाई धर्म ग्रहण करने लगे। ईसाई धर्म के साथ - साथ मिशनो ने शिक्षा का प्रसार भी किया गया इससे भी जनता मे जागृति आई।

अपने हिन्दू भाईयों को प्रलोभन देकर ईसाई, जो उस समय विदेशी धर्म के रूप मे एक विदेशी संस्कृति का भी प्रचारक थी, बनाने की अंग्रेजो की नीति पर्वतीय जनता को पसंद न थी। अत: ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध यह भी जन आन्दोलन का एक कारण था।

PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर
7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

आर्य समाज – भारत वर्ष के स्वतन्त्रता- संग्राम में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्य समाज ने कुमाऊं - गढ़वाल जैसे पिछड़े एवं दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में भी सामाजिक और राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने के सफल प्रयास किये। यहां उसने निर्धन परिवारों को ईसाई बनने से बचाया। आर्य समाज ने कुमाऊं - गढ़वाल के समाज में व्याप्त जाति प्रथा और ~~उत्पन्न~~ धार्मिक अन्धविश्वासों पर कुठाराघात किया 'नायक जाति' की कन्याओं के उत्थान के लिए कार्य किये और सन् 1920 में गढ़वाल में भीषण अकाल के समय राहत कार्य किये। आर्य समाज ने गढ़वाल में शिक्षा के प्रसार के लिए विशेष महत्व देते हुए वहां कुछ विद्यालयों की स्थापना की। शिक्षा से जनसाधारण में राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ

अनेक सामाजिक कार्यों के अतिरिक्त आर्य समाज ~~के संस्थापक~~ कुमाऊं - गढ़वाल में राष्ट्रीय भावनाओं का विकास किया। गढ़वाल में आर्य समाज के संस्थापक - टेकचन्द अपने शिष्यों को उपदेश देते हुए कहा करते थे। कि आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य देश को गुलामी से मुक्त करना, हिन्दू जाति को पतन से बचाना और जन साधारण को नैतिकता की दृष्टि से ऊँचा उठाना है।

उत्तराखण्ड एज्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

वर्ग (अ)

'आर्थिक कारण'

विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रत्येक देश की सरकार के विरुद्ध जन आन्दोलन के लिए आर्थिक कारण विशेष रूप से उत्तरदायी होते हैं

उन्नीसवी सदी मे ब्रिटिश सरकार और टिहरी राज्य के राजाओं द्वारा गढ़वाल-कुमाऊं मे जनसाधारण के आर्थिक शोषण ~~किये~~ के लिए अनेक साधन अपनाये गये जिनके फलस्वरूप जनसाधारण को कठिनाइयां महसूस होने लगी और उसने संगठित होकर आन्दोलनो का आश्रय लिया। मुख्यत: निम्न साधनों के माध्यम से कुमाऊं-गढ़वाल की जनता का आर्थिक शोषण होता था-

कुली उतार, कुली बेगार, और कुली बर्दायश-

ब्रिटिश काल मे कुमाऊं कमिश्नरी मे कुली उतार, कुली बेगार और कुली बर्दायश कुप्रथाएं प्रचलित थी। कुमाऊं के अधिकांश इतिहास लेखको ने इन तीनो कुप्रथाओं को केवल 'कुली उतार' अथवा 'कुली बेगार' के नाम से सम्बोधित था।.....

PTO

उत्तराखण्ड एज्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर
7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

कुली उतार - अंग्रेज अधिकारी कुछ कर्मचारी तथा अपने घरेलू नौकरो सहित समय-समय पर कुमाऊं कमिश्नरी के दौरे पर आते थे। उस काल में यहां आवागमन के साधनो का नितान्त अभाव था। अत: उनके सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने के लिए कुलियो की आवश्यकता पड़ती थी, जिसकी पूर्ति कुमाऊं कमिश्नरी की जनता द्वारा की जाती थी। भूमिहीन लोगो के अतिरिक्त यहां के सभी निवासियों को कुली उतार देना पडता था तथा अवहेलना करने पर पांच रुपये से लेकर पन्द्रह रुपय तक का जुर्माना निर्धारित था। प्रत्येक अधिकारी के लिए कुलियों की संख्या निर्धारित थी। कुलियों को अत्याधिक-न्यून मजदूरी दी जाती थी। तराई-भावर से अल्मोड़ा नगर तक बोझ ढोने वाले कुली को केवल बारह आने मजदूरी दी जाती थी। 'कुली उतार' के समय व्यक्ति की स्थिति पर कोई ध्यान नही दिया जाता था। व्यक्ति चाहे किसी भी स्थिति में हो उसे 'कुली उतार' देना ही पड़ता था। ----- PTO

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

कुमाऊं कमिश्नरी में 'कुली उतार' प्रथा का सर्वाधिक घृणित पहलू यह था कि दौरे पर आने वाले अंग्रेज अधिकारियों के अतिरिक्त आंग्ल पर्यटकों और उनकी 'आया' तक के लिए कुलियों का प्रयोग किया जाता था। 'कुली उतार' प्रथा के अन्तर्गत सरकार कुलियों को मजदूरी देने के लिए बाध्य थी, किन्तु जनता की आम शिकायत यह थी कि उन्हें मजदूरी नहीं मिलती है। इसका कारण यह बताया जाता है कि अधिकारी अपने सेवकों (निम्न कर्मचारी जो कि ब्रिटिश काल में भारतीयों के लिए सर्वथा सुरक्षित थे) को कुलियों की मजदूरी दे देते थे, परन्तु सेवक जनता को डरा-धमका कर भगा देते थे और मजदूरी को स्वयं हड़प लेते थे। एक ओर कुली को मजदूरी नहीं मिल पाती थी और दूसरी ओर उनके साथ सरकारी कर्मचारी अभद्र व्यवहार करते थे। 1918 में में अल्मोड़ा डिप्टी कमिश्नर मि० लोमस ने एक कुली को केवल देर से आने के अपराध में गोली मार दी थी।

कुली बेगार - इस प्रथा के अन्तर्गत बिना मजदूरी के दौरे पर आये हुए अंग्रेज अधिकारी के कार्य करने पड़ते थे। सार्वजनिक निर्माण कार्यों में भी बेगार का उपयोग किया जाता था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान
उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर
उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम बोर्ड
सतपाल चौहान सर
9411385738
8077038494

* कुली बर्दायश :- कुली बर्दायश के अन्तर्गत दौरे पर आने वाले अंग्रेज अधिकारियों तथा उनके नौकर-चाकरों को 'मुफ्त में खाद्य सामग्री' देनी पड़ती थी। इस प्रथा के उल्लंघनकर्ता को आर्थिक दण्ड दिया जाता था। रामजे के काल में पट्टी सोमेश्वर के एक गांव के निवासियों ने बर्दायश देने में अपनी असमर्थता व्यक्त की तो रामजे ने उनसे पांच सौ रुपया आर्थिक दण्ड के रूप में वसूल किया था।

यद्यपि कुली उतार, कुली बेगार और कुली बर्दायश नामक कुप्रथाएं कुमाऊं कमिश्नरी के पुराने राजाओं परमारों, चन्दों और गोरखों के समय में विद्यमान थी, तथापि अंग्रेजों के समय इनके नियमों में कठोरता आ गई थी। चन्दों के समय मजदूरी पेशा करने वालों से ही बेगार ली जाती थी। हिन्दू धर्म में राजा को विष्णु का अवतार माना जाता था। अतः उसको कन्धे में ले जाना जनता अपना गौरव समझती थी। गोरखों के शासनकाल में यद्यपि राह चलते हुए लोगों को सामान ढोने (बेगार) के लिए पकड़ लिया जाता था; तथापि जब वे लोग (कुली) कर्मचारियों की नजर से बचकर सामान को मार्ग में ही फेंककर भाग जाने में सफल हो जाते थे, तो कोई पूछताछ नहीं होती थी। किन्तु ब्रिटिश काल के अन्तर्गत कुलियों (जनता) का नाम रजिस्टर में अंकित होने के कारण सामान फेंक कर अथवा अन्य युक्तियों से भाग निकलना नितांत असंभव था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल-चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

कुमाऊं कमिश्नरी की भांति टिहरी-राज्य में भी कुली उतार, बड़ी बर्दायश और बरा आदि के नाम से कुछ प्रथाएं प्रचलित थी, जिनमें जनता का आर्थिक शोषण होता था।

कुली उतार (टिहरी राज्य में) टिहरी राज्य में कुली उतार को छोटी बर्दायश भी कहा जाता था। इसके अन्तर्गत जनता को दरबार के कर्मचारियों एवं अतिथियों का सामान ढोना पड़ता था। प्रत्येक व्यक्ति को भू-राजस्व कर की राशि के अनुसार कुली उतार देना पड़ता था। अधिक भू-कर देने वाले व्यक्ति को कुली उतार भी अधिक देना पड़ता था। कुली उतार प्रथा के अन्तर्गत कार्य करने वालों की मजदूरी कम, किन्तु निर्धारित थी। टिहरी राज्य कुली उतार प्रथा की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इससे कुछ विशेष परिस्थितियों में जनसाधारण को और कुछ व्यक्तियों को छूट दी गयी थी। नगद धनराशि देकर भी इस प्रथा से छूट का प्रावधान था। टिहरी राज्य के अधिकारियों द्वारा मांगी गई संख्या के अनुसार ग्राम प्रधान व्यक्तियों को 'कुली उतार' प्रथा हेतु भेजता था और पटवारी को उसका पूरा विवरण रखना पड़ता था। इस कुप्रथा से टिहरी राज्य की जनता में व्यापक असंतोष था

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731
देहरादून

बड़ी बर्दायश :-

जब राजा के परिवार इसके विशिष्ट अतिथि गण, राजनैतिक प्रतिनिधि (Political Agent) और राजनैतिक विभाग के अधिकारियों के लिए कुलियों का प्रयोग किया जाता था, तो उसे बड़ी बर्दायश कहा जाता है। 1930 में इसका नाम बदलकर 'प्रभुसेवा' रख दिया गया। छोटी बर्दायश की भांति 'बड़ी बर्दायश' के अन्तर्गत कुछ संभ्रात परिवारों को छूट न देकर केवल स्त्रियों और विधवा परिवारों को ही छूट दी गई थी।

विवशस्थिती प्रधान परिवारों को छोड़कर अन्य परिवारों को प्रत्येक वर्ष बार बार 'प्रभुसेवा' देनी पड़ती थी। यदि राजा अथवा अन्य अधिकारियों के भ्रमण में ये बारियां पूरी नहीं हो पाती थी, तो उनका उपयोग सार्वजनिक निर्माण कार्यों में किया जाता था। प्रभुसेवा निशुल्क होती थी। टिहरी राज्य में बाद के राजाओं के समय में अन्न अथवा धन देकर 'प्रभुसेवा' से छुटकारा मिल सकता था।

टिहरी राज्य में राजा की भांति मुआफीदार तथा जागीरदार जनता से बेरी - और बड़ी बर्दायश का उपयोग ~~निजी~~ निजी हितों के लिए करते थे।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल चौहान सर

≡ बरा - टिहरी राज्य में राजा और उसके कर्मचारी जनता से निःशुल्क खाद्य-सामग्री लेते थे, जिसे 'बरा' कहा जाता था। प्रत्येक कर्मचारी ~~को~~ ~~दुष्ट~~ के लिए 'बरा' की मात्रा निर्धारित थी। किन्तु वहां के कर्मचारी इतने दुष्ट थे कि निर्धारित मात्रा से अधिक 'बरा' वसूल करते थे।

≡ 'बनिया डबल कर' कुमाऊं कमिश्नरी में जनता से लगान के साथ तीन पाई प्रति रुपये के हिसाब से 'बनिया डबल' नामक कर वसूल किया जाता था। यह धन-राशि उन बनियों को दी जाती थी, जो सरकारी पड़ाव अथवा दौरे में कर्मचारियों को खाद्य सामग्री पहुंचाने का काम करते थे।

≡ दस्तूरी -
इस प्रथा के अन्तर्गत प्रजा द्वारा सरकार को दिये जाने वाले अनेक अलिखित कर थे।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077039494 सतपाल चौहान
उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077039494 सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम-नोट्स
सतपाल-चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

टिहरी राज्य द्वारा जनता का शोषण :-

टिहरी राज्य के राजाओं ने अपने खजाने (कोष) को भरने के लिए जनता पर अनेक कर लगाकर उसका शोषण किया। उनकी आर्थिक शोषण की नीति यहां तक बढ़ गई थी कि उन्होंने आवश्यक आवश्यकताओं की वस्तुओं पर 'चौनटोटी' कर शिकार खेलने पर नियन्त्रण और बिना अनुमति पत्र प्राप्त किये बड़ी नदियों में मछली मारने पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया

गढ़वाल में दुर्भिक्ष और गढ़वाली पल्टन को तोड़ा जाना :-

गढ़वाल में कृषि मुख्यतः प्रकृति पर ही निर्भर है। वहां अक्सर अकालों का प्रकोप छाया रहता है। सन 1878, 1890, 1892 तथा 1920 में ~~ब्रिटिश सरकार~~ अकाल पड़ा। प्रथम विश्व युद्ध में अपने स्वार्थों की पूर्ति के पश्चात 1920 में ही ब्रिटिश सरकार ने पल्टनें तोड़ दी। फलतः अनेक गढ़वाली, जो सेना में कार्यरत थे, उन्हें घर वापस आना पड़ा और वहां की कम उपजाऊ भूमि से उनका जीवन-निर्वाह कठिन था। अतः गढ़वाली लोगों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इससे जनसाधारण का ब्रिटिश शासन के प्रति विश्वास उठ गया स्वाभाविक था।

(43)

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

नयाबाद :-

बेनाप भूमि को, जो आबाद की जाती थी, 'नयाबाद' कहते हैं। बीसवीं शताब्दी में सरकार की 'नयाबाद' नीति से भी कुमाऊं के जनसाधारण में व्यापक असंतोष था। क्योंकि ब्रिटिश सरकार के समर्थकों एवं आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यक्तियों को ही बंजर भूमि आबाद करने के लिए दी जा रही थी

असंतोषजनक वन व्यवस्था :

इसर प्रदेश में वन व्यवस्था 1861 से प्रारम्भ हुई। इससे पूर्व प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्रतापूर्वक जंगलों का उपयोग कर सकता था। 1865 में प्रथम जंगलात कानून बनाया गया 1877 में पहली बार कुछ जंगल सुरक्षित घोषित किये गये। 1878 में नया जंगलात कानून बनाया गया।

कुमाऊं कमीश्नरी में 1868 तक जंगलात व्यवस्था यहां के कमिश्नर के अधीन रही 1878 में पुनः नये जंगलात कानून निर्मित होने पर कुमाऊं में 638 वर्ग मील जमीन को सुरक्षित घोषित किया गया

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
9411385738
8077036494
सतपाल चौहान

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

1893 में ब्रिटिश सरकार ने एक आदेश द्वारा समस्त बेनाप जमीन को अपने अधिकार में कर उसे सुरक्षित जंगल घोषित किया गया और कुछ वृक्षों को सुरक्षित घोषित कर दिया। ऐसे वृक्ष डिप्टी कमिश्नर की आज्ञा से नहीं काटे जा सकते थे।। सरकार ने जंगलों के विस्तार की नीति अपनाई और कृषि भूमि के विस्तार, पेड़ों के कटान, शिकार खेलने तथा मछली मारने पर प्रतिबंध लगा दिया।

सन 1911 से 1917 तक कुमाऊं कमिश्नरी में वन बन्दोबस्त सम्पन्न हुआ। यह बन्दोबस्त अल्मोड़ा और नैनीताल जिलों में मि. स्टाइफ तथा ब्रिटिश गढ़वाल में नेलसन द्वारा किया गया। इन बन्दोबस्तों के माध्यमों से 2311 वर्गमील भूमि सुरक्षित जंगल घोषित कर दी गई और इनमें प्रजा के वन-सम्बन्धी अधिकार छीन लिए गये। बेनाप के अतिरिक्त कुछ नाप जमीन भी छीन ली गई और फसी तोड़ने के विरुद्ध जनता में तीव्र आक्रोश फैला और उसने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जन आन्दोलन का रूप धारण कर लिया इस आन्दोलन का स्वरूप इतना दोषपूर्ण था कि सरकार के समर्थकों ने भी इसका विरोध किया सरकार ने वनों की रक्षा हेतु तार-बाड़ लगा दी और कई कर्मचारियों को नियुक्त किया इनमें से अधिकांश कर्मचारी सदाचारी थे और उनका प्रमुख लक्ष्य जनसाधारण को डराना व धमकाना था।

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494
उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 9411385738 8077036494

उत्तराखण्ड एजाम नोट्स
सतपाल चौहान सर 7579431731

उत्तराखण्ड एजाम नोट्स 9411385738 8077036494

उस काल में टिहरी राज्य का लगभग आधा भाग जंगल था सन 1927-28 में वहां राज्य की ओर से नवीन वन व्यवस्था सम्पन्न हुई। इसमें जनता के हितो को ध्यान में नही रखा गया, बल्कि उनकी उपेक्षा ही गई। परगना स्थापित में राज्य की ओर से वनों की सीमायें निर्धारित की गई, उसमें ग्रामीणो के आने-जाने के मार्ग, खलिहान तथा पशुओं को बांधने के स्थान (गोशाला) भी वन की सीमा के अन्तर्गत आ गये। फलतः ग्रामीणो के पशुओं को चराने और घास-लकड़ी काटने के अधिकार समाप्त हो गये जनता ने टिहरी राज्य की ओर से अपनाई गई असुविधाजनक वन-व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई तो उसका कोई प्रभाव नही पड़ा क्योंकि टिहरी राज्य वन विभाग की नियमावली के अनुसार राज्य के समस्त वन राजा की व्यक्तिगत सम्पति के अन्तर्गत आते थे। इसलिए कोई भी व्यक्ति वन वस्तुओं को बिना शुल्क दिये केवल राजा की विशेष कृपा से ही प्राप्त कर सकता था।

ब्रिटिश सरकार तथा टिहरी रियासत द्वारा अपनाई गई, दोषपूर्ण वन-नीति से कुमाऊं कमिश्नरी और टिहरी राज्य की जनता को भारी दुख था कुमाऊं गढ़वाल का प्रमुख व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन प्रमुख रूप से वनों पर आश्रित थे। अतः ब्रिटिश सरकार तथा टिहरी राज्य की सरकार द्वारा जंगलो में जनसाधारण को उनके अधिकारों से वंचित किये जाने से यहां के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय संकट में पड़ गये।

उत्तराखण्ड एजाम नोट्स 9411385738 8077036494

उत्तराखण्ड एग्जाम नोट्स 7579431731
सतपाल - चौहान सर

वर्ग (इ)

अन्य काल

सन 1930 का भू-बन्दोबस्त :

1930 में ब्रिटिश सरकार ने अपनी आय में वृद्धि करने के उद्देश्य से नया भू-बन्दोबस्त करने का निश्चय किया। इस बन्दोबस्त के प्रारम्भ होने से पूर्व ही अल्मोड़ा और नैनीताल जिलों में इसके विरुद्ध आन्दोलन होने लगे फलतः इन जिलों में नवीन भू-बन्दोबस्त नहीं हुआ किन्तु ब्रिटिश गढ़वाल जिले में यह बन्दोबस्त सम्पन्न हुआ।

1930 में डिप्टी कमिश्नर ईवटसन ने ब्रिटिश गढ़वाल का भू-बन्दोबस्त सम्पन्न किया। इस बन्दोबस्त के माध्यम से लगान में तैंतीस प्रतिशत की अप्रत्याशित वृद्धि कर दी गई

गढ़वाल की भूमि तीर्थ स्थानों की भूमि है यहां प्राचीन समय से ही देश के महान धर्मानुयाई आते रहे। बीसवीं शताब्दी में आवागमन की कुछ सुविधाएं उपलब्ध हो जाने के कारण अधिक संख्या में लोग देश के कोने से यहां की तीर्थ यात्रा पर आये। इस प्रकार के निरन्तर जन-संम्पर्क से भी इस क्षेत्र में राजनैतिक चेतना आई।